कह्या इतथें आगे सुंन, निराकार निरगुन।
भी कह्या निरंजन, ताथें अगम रह्या सबन।। १२ ।।

सबने यही कहा कि क्षर से आगे, शून्य से आगे, शून्य, निराकार, निरंजन, और निर्गुण बताया, इसीलिए उस पारब्रह्म तक कोई नहीं पहुंच पाया। वह अगम ही रहा।

कैयों ढूंढ़या होए दरवेस, फिरे जो देस विदेस।
पर पाया ना काहूं भेस, आगूं ला मकान कह्या नेस।। १३ ।।

कईयों ने साधु और फकीर का भेष धारण कर देश और विदेश में घूमकर खोजा। किसी भी भेष धारी ने परमात्मा को प्राप्त नहीं किया और अन्त में उन्होंने क्षर से आगे कुछ नहीं है, ऐसा कह दिया।

मंगलाचरन तमाम ।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। ५८७ ।।

साखी–
दौड़ करी सिकंदरे, ढूंढ़या हैयाती आब।
बका अर्स पाया नहीं, उलंघ न सक्या ख्वाब।। १ ।।

सिकन्दर बादशाह ने अखण्ड अमृत रस पाने के वास्ते बहुत खोज की, किन्तु निराकार को पार नहीं कर सका और परमधाम नहीं पा सका।

हारे ढूंढ़ ऊपर तले, खुदा न पाया किन।
तब हक का नाम निराकार, कह्या निरंजन सुन।। २ ।।

कईयों ने ऊपर नीचे ढूंढ़ा, पर खुदा (पारब्रह्म) किसी को नहीं मिला। तब पारब्रह्म को निराकार निरंजन और शून्य कह दिया।

और नाम धरया हक का, बेचून बेचगून।
कहे हक को सूरत नहीं, बेसबी बेनिमून।। ३ ।।

मुसलमानों ने भी खुदा की सूरत नहीं है कहकर उसे बेचून, बेचगून, बेसबी, बेनिमून कह दिया।

इत थें आए महंमद, ल्याए फुरमान हकीकत।
देखाए खोल माएने, अर्स हक सूरत।। ४ ।।

अब उस अखण्ड परमधाम से रसूल साहब आए और हकीकत का ज्ञान कुरान लाए तथा इसके छिपे रहस्यों को खोलकर पारब्रह्म की अमरद (किशोर) सूरत का बयान किया।

मैं आया हक का हुकम, हक आएगा आखिरत।
कौल किया हकें मुझसों, मैं ल्याया हक मारफत।। ५ ।।

रसूल साहब ने कहा कि मैं खुदा के हुकम से आया हूं और आखिर को खुद खुदा आएगा। खुदा ने आने का वायदा मेरे से किया है और उनकी पहचान के वास्ते मैं सब निशान लाया हूं।

उतरी अरवाहें अर्स से, रूहें बारे हजार।
और उतरी गिरो फरिस्ते, और कुंन से हुआ संसार।। ६ ।।

परमधाम से बारह हजार रूहें खेल में आई हैं। अक्षरधाम से ईश्वरीसृष्टि उतरी हैं। कुंन शब्द कहने से यह आम खलक (जीवसृष्टि) की उत्पत्ति हुई है।

Nijanand App

महंमद कहे मैं उमत पर, ल्याया हक फुरमान।
जो लेवे मेरी हकीकत, ताए होवे हक पेहेचान।।७।।

रसूल साहब कहते हैं कि मैं खुदा से ब्रह्मसृष्टियों का सन्देशा लाया हूं और जो मेरे इन वचनों की हकीकत के रहस्य को समझेंगे उनको सब सच्चाई का पता चल जाएगा।

सात तबक तले जिमी के, तिन पर है नासूत।
तिन पर हैं कई फरिस्ते, तिन पर है मलकूत।।८।।

इस जमीन के नीचे सात लोक हैं (अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल) इनके ऊपर यह मृत्युलोक है। इसके ऊपर पांच लोकों (भुवर्लोक, स्वर्ग लोक, महर लोक, जन लोक और तप लोक) में देवी देवताओं का वास है। इन तेरह लोकों के ऊपर मलकूत बैकुण्ठ है।

ला हवा मलकूत पर, ला पर नूर मकान।
नूर पार नूर तजल्ला, मैं तहां से ल्याया फुरमान।।९।।

बैकुण्ठ के ऊपर निराकार का आवरण है। निराकार के ऊपर अक्षरधाम है। अक्षरधाम के आगे परमधाम है। मैं वहां से अक्षरातीत का सन्देशा लेकर आया हूं।

जबराईल पोहोंच्या नूर लग, मैं पोहोंच्या पार हजूर।
मैं वास्ते उमत के, बोहोत करी मजकूर।।१०।।

जबराईल फरिश्ता अक्षरधाम तक पहुंचा। मैं श्री राजजी महाराज पारब्रह्म के पास परमधाम तक गया और पारब्रह्म के पास अपने मोमिनों के वास्ते बहुत वार्तालाप किया।

कह्या सुभाने मुझको, हरफ नब्बे हजार।
कह्या तीस जाहेर कीजियो, और तीस तुम पर अखत्यार।।११।।

पारब्रह्म ने मुझको नब्बे हजार हरफ कहे और हुकम दिया कि तीस हजार जाहिर करना। तीस हजार संकेत में जाहिर करने का अधिकार दिया।

बाकी जो तीस रहे, सो राखियो छिपाए।
बका दरवाजे खोलसी, आखिर को हम आए।।१२।।

बाकी जो मारफत के तीस हजार रहे, उन्हें छिपे रखने का ही आदेश दिया और कहा कि आखिर वक्त में मैं स्वयं आकर अखण्ड घर की पहचान दूंगा।

कौल किया हकें मुझ से, हम आवेंगे आखिर।
ज्यों आवे ईमान उमत को, तुम जाए देओ खबर।।१३।।

रसूल साहब ने कहा कि पारब्रह्म ने आखिरत को आने का वायदा मुझे किया और यह भी कहा कि मेरी ब्रह्मसृष्टियां को मेरे आने पर मुझ पर यकीन आ जाए। ऐसी खबर जाकर दो।

होए काजी हिसाब लेयसी, दुनी को होसी दीदार।
भिस्त देसी कायम, रूहें लेसी नूर के पार।।१४।।

खुदा ने कहा कि मैं वक्त आखिरत को सबका न्यायाधीश बनकर आऊंगा और सबका न्याय चुकाकर दुनियां को दर्शन दूंगा। दुनियां को बहिश्तों में अखण्ड करके ब्रह्मसृष्टियों को अक्षर के पार घर (परमधाम) ले जाऊंगा।

Nijanand App

ईसा मेंहेदी जबराईल, और असराफील इमाम।
मार दज्जाल एक दीन करसी, खोलसी अल्ला कलाम।। १५ ।।

ईसा रूह अल्लाह श्री श्यामा महारानी, जबराईल, असराफील और इमाम मेंहदी दज्जाल को मार करके एक निजानन्द सम्प्रदाय में सबको लाएंगे और कुरान के रहस्यों को जाहिर करेंगे।

सो ए कौल माने नहीं, हिंदू मुसलमान।
महंमद कहे जाहेर, पर ए ल्यावें ना ईमान।। १६ ।।

इन भविष्यवाणियों को हिन्दू और मुसलमान दोनों ने नहीं माना। मुहम्मद साहब ने स्पष्ट कह दिया, परन्तु उनकी बातों पर किसी ने विश्वास नहीं किया।

तो भी न मानें हक सूरत, पातसाह अबलीस दिलों जिन।
कहे हक न किनहूं देखिया, खुदा निराकार है सुंन।। १७ ।।

जिनके दिलों पर अबलीस शैतान (नारद) बैठा है, वह पारब्रह्म के स्वरूप को नहीं मानते। वह कहते हैं कि उसे आज दिन तक किसी ने देखा ही नहीं। वह निराकार और शून्य है।

सोई कौल सरीयत ने, पकड़ लिया इनों से।
कौल तोड़त रसूल के, दुस्मन बैठा दिल में।। १८ ।।

हिन्दुओं की तरह ही शरीयत पर चलने वाले मुसलमानों ने उसी बात को पकड़ लिया। दिल के ऊपर अबलीस शैतान दुश्मन बना बैठा है, इसलिए रसूल साहब के वचनों को झूठा करने में लगा है।

आखिर आए रूहअल्ला, सो लीजो कर आकीन।
ए समझेगा बेवरा, सोई महंमद दीन।। १९ ।।

रसूल साहब ने कहा कि वक्त आखिरत को रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) आएंगे। उन पर विश्वास कर लेना। उनके बताए ज्ञान को वही समझेंगे जो आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के निजानन्द सम्प्रदाय पर विश्वास करेंगे।

जो कछू कह्या महंमदे, ईसे भी कह्या सोए।
ए माएने सो समझहीं, जो अरवा अर्स की होए।। २० ।।

जो कुछ रसूल साहब ने कहा, श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी ने वही कहा पर इन दोनों के सच्चे अर्थों को वही समझेंगे जो परमधाम की रूहें होंगी।

सात लोक तले जिमी के, मृत लोक है तिन पर।
इंद्र रुद्र ब्रह्मा बीच में, ऊपर विष्णु बैकुण्ठ घर।। २१ ।।

इस पृथ्वी के नीचे सात लोक (अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल) हैं। इन सातों के ऊपर मृत्युलोक है और इनके ऊपर पांच लोक देवी-देवताओं के हैं जिनमें इन्द्र, शंकरजी और ब्रह्माजी रहते हैं। उनके ऊपर चौदह लोकों के मालिक विष्णु भगवान का बैकुण्ठ धाम है।

निराकार बैकुण्ठ पर, तिन पर अछर ब्रह्म।
अछरातीत ब्रह्म तिन पर, यों कहे ईसे का इलम।। २२ ।।

बैकुण्ठ के ऊपर निराकार तथा निराकार के ऊपर अक्षर ब्रह्म है। अक्षरातीत ब्रह्म अक्षर से ऊपर है। ऐसा ज्ञान श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) का कहना है।

Nijanand App

ए बेवरा वेद कतेब का, दोनों की हकीकत।
इलम एकै बिध का, दोऊ की एक सरत।। २३ ।।

हिन्दुओं के वेद और मुसलमानों के कतेब दोनों में सृष्टि का विवरण एक जैसा है। दोनों का ज्ञान तथा कयामत का समय एक जैसा है। केवल भाषा का अन्तर है।

ईसे महंमद मेंहेदी का, इन तीनों का एक इलम।
हक नहीं ब्रह्मांड में, ए हुआ पैदा जिनके हुकम।। २४ ।।

मुहम्मद साहब, ईसा रूह अल्लाह (श्यामाजी श्री देवचन्द्रजी) और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी का तीनों का एक ही ज्ञान है। वह यह है कि जिसने हुकम देकर ब्रह्माण्ड को पैदा किया है, वह इस संसार में नहीं है।

दुनियां बीच ब्रह्मांड के, ऐसा होए जो इलम लिए ए।
हक नजीक सेहेरग से, बीच बका बैठावे ले।। २५ ।।

इस संसार में जिसको यह ज्ञान मिल जाए उसको पारब्रह्म सेहेरग से भी नजदीक हो जाता है। उसे निराकार से निकाल कर योगमाया के अखण्ड ब्रह्माण्ड में मुक्ति दे देते हैं।

करम कांड और सरीयत, ए तब मानें महंमद।
जब ईसा और इमाम, होवें दोऊ साहेद।। २६ ।।

कर्मकाण्ड के मानने वाले हिन्दू लोग और शरीयत के मानने वाले मुसलमान लोग मुहम्मद साहब को खुदा का पैगाम देने वाला तब सच्चा मानेंगे, जब ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामाजी) और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी मुहम्मद की वाणी को सच कहेंगे।

हिंदू न माने कौल महंमद, न सरीयत मुसलमान।
यों जान चौथे आसमान से, आया ईसा देने ईमान।। २७ ।।

हिन्दू लोग मुहम्मद साहब के वचनों को सच्चा नहीं मानते और न ही शरीयत के मानने वाले मुसलमान कयामत को और इमाम मेंहदी के आने की भविष्यवाणी को मानते है, इसलिए ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामा महारानी) चौथे आसमान (लाहूत परमधाम) से उतरकर आए हैं जिससे लोगों को विश्वास आ जाए।

और आए इमाम, ऊपर अपनी सरत।
दे साहेदी महंमद की, करे इमामत।। २८ ।।

अपने किए वायदे के अनुसार इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) भी आए जो रसूल साहब की गवाही देते हुए आगे परमधाम ले जाने का रास्ता बताते हैं।

ईसा इमाम उमत को कहे, चलो हुकम माफक।
दे साहेदी महंमद की, दूर करे सब सक।। २९ ।।

ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामाजी-श्री देवचन्द्रजी) और श्री प्राणनाथजी अपने सुन्दरसाथ को कहते हैं कि अपने धनी के हुकम के अनुसार चलो और रसूल मुहम्मद ने जो कहा है उसकी तारतम ज्ञान से कुरान के वचनों की गवाही दो और सबके संशय मिटाओ।

Nijanand App

पेहेले लिख्या फुरमान में, आवसी ईसा इमाम हजरत।
मारेगा दज्जाल को, करसी एक दीन आखिरत।। ३० ।।

रसूल साहब ने पहले से ही कुरान में लिखा है कि ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामा महारानी) और हजरत इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) आएंगे और दज्जाल को मारकर दुनियां का झूठा ज्ञान मिटाकर सबको निजानन्द सम्प्रदाय में लाएंगे।

वेदों कह्या आवसी, बुध ईश्वरों का ईस।
मेट कलजुग असुराई, देसी मुक्त सबों जगदीस।। ३१ ।।

वेदों ने भी कहा कि सब ईश्वरों के मालिक जागृत बुद्धि के अवतार श्री प्राणनाथजी आएंगे और कलियुग की राक्षसी बुद्धि को समाप्त कर सबको बहिश्तों में अखण्ड करेंगे।

बुध ब्रह्मसृष्टी वास्ते, आवसी कह्या वेद।
ए बात है उमत की, कोई और न जाने भेद।। ३२ ।।

वेदों ने भी कहा ब्रह्मसृष्टि के वास्ते बुधजी आएंगे। इस बात को ब्रह्मसृष्टि ही समझेगी और कोई नहीं समझेगा।

जो नेत नेत कह्या निगमे, सब लगे तिन सब्द।
माएने निराकार पार के, क्यों समझे दुनियां हद।। ३३ ।।

वेद ने जिस पारब्रह्म को 'नेति-नेति' कहा है, वह यहां नहीं है, कहां है? सब लोग इन्हीं शब्दों को पकड़कर बैठे हैं। यह निराकार (हद) के जीव निराकार के पार के वचनों को कैसे समझ सकते हैं?

पेहेले हवा कही मलकूत पर, सब सोई रहे पकड़।
पाई न हकीकत कुरान की, तो कोई सक्या न ऊपर चढ़।। ३४ ।।

बैकुण्ठ के ऊपर निराकार है। सब लोग इसी को ब्रह्म मानकर बैठे हैं। कुरान का ज्ञान नहीं जान पाने से निराकार के ऊपर कोई अपनी सुरता नहीं ले जा सका।

वेद कहे उत दुनी की, पोहोंचे न मन अकल।
कहे कतेब छोड़ सुरिया को, आगे पोहोंचे न अर्स असल।। ३५ ।।

वेद कहते हैं कि दुनियां की अक्ल पारब्रह्म को नहीं पहुंचती। कतेब ग्रन्थ कहते हैं कि ज्योति स्वरूप (सुरिया सितारा) को लांघकर अखण्ड परमधाम में किसी की बुद्धि नहीं जाती।

निगमें गम कही ब्रह्म की, क्यों समझे ख्वाबी दम।
सो ए करूं सब जाहेर, रूहअल्ला के इलम।। ३६ ।।

वेदों ने पारब्रह्म के बारे में जो बातें कही हैं, उसे सब संसार के जीव नहीं समझ सकते। श्री महामतिजी रूह अल्लाह (श्री श्यामाजी) की तारतम वाणी से सब छिपे भेदों का रहस्य जाहिर कर रहे हैं।

कहूं ईसे के इलम की, जो है हकीकत।
हक बका अर्स उमत, जाहेर करी मारफत।। ३७ ।।

रूह अल्लाह (श्री श्यामा महारानी) के तारतम ज्ञान की हकीकत यह है कि इस ज्ञान से पारब्रह्म की, अखण्ड घर की तथा ब्रह्मसृष्टियों की पूर्ण पहचान हो जाती है।

Nijanand App

नाम सारों जुदे धरे, लई सबों जुदी रसम।
सबमें उमत और दुनियां, सोई खुदा सोई ब्रह्म।। ३८ ।।

संसार में लोगों ने पारब्रह्म को पाने के लिए अलग-अलग नाम रख लिए और उन्हें प्राप्त करने के वास्ते अलग-अलग नियम (रीति-रिवाज) बना लिए। हिन्दू और मुसलमान दोनों की जमात में ब्रह्मसृष्टि उतरी है। इसे मुसलमान उम्मत कहते हैं। हिन्दू लोग ब्रह्मसृष्टि कहते हैं। मुसलमान खुदा कहते हैं। हिन्दू लोग ब्रह्म कहते हैं।

लोक चौदे कहे वेद ने, सोई कतेब चौदे तबक।
वेद कहे ब्रह्म एक है, कतेब कहे एक हक।। ३९ ।।

वेदों ने चौदह लोक कहे हैं। कतेब में चौदह तबक कहा है। वेद कहते हैं ब्रह्म एक है। कुरान कहता है हक एक है।

तीन सृष्ट कही वेद ने, उमत तीन कतेब।
लेने न देवे माएने, दिल आड़ा दुस्मन फरेब।। ४० ।।

वेद ने तीन सृष्टियां बताई हैं। कतेब ने तीन उम्मतें बताई हैं। यह शैतान अबलीस (नारद) दिलों में दुश्मन बनकर बैठा है, इसलिए हिन्दू और मुसलमानों को सीधे अर्थ लेने नहीं देता।

दोऊ कहे वजूद एक है, अरवा सबमें एक।
वेद कतेब एक बतावहीं, पर पावे न कोई विवेक।। ४१ ।।

हिन्दू मुसलमान दोनों कहते हैं कि शरीर एक हैं और सबके अन्दर प्राण एक है, जीव एक है। वेद-कतेब तो एक जैसा ही ज्ञान देते हैं, परन्तु कोई भी विचार करके इसे ग्रहण नहीं कर पाता।

जो कछू कह्या कतेब ने, सोई कह्या वेद।
दोऊ बंदे एक साहेब के, पर लड़त बिना पाए भेद।। ४२ ।।

जो कुछ कतेब ने कहा वही ज्ञान वेद ने दिया। हिन्दू और मुसलमान दोनों एक ही ब्रह्म के उपासक हैं, किन्तु दोनों की जानकारी न होने के कारण आपस में लड़ते हैं।

बोली सबों जुदी परी, नाम जुदे धरे सबन।
चलन जुदा कर दिया, ताथें समझ न परी किन।। ४३ ।।

संसार के लोगों की भाषाएं अलग-अलग हैं। सबने अपनी-अपनी भाषाओं में पारब्रह्म के अलग-अलग नाम रख लिए हैं। अपनी-अपनी पूजा पद्धति और रहनी अलग-अलग कर ली और इसलिए सब उसको भुला बैठे।

ताथें हुई बड़ी उरझन, सो सुरझाऊं दोए।
नाम निसान जाहेर करूं, ज्यों समझे सब कोए।। ४४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हिन्दू मुसलमान की इस उलझन को मैं सुलझा देती हूं। मैं दोनों के परमात्मा, रीति-रिवाज और विधि-विधान सब जाहिर कर देती हूं, ताकि सभी सत्य को समझ लें।

विष्णु अजाजील फरिस्ता, ब्रह्मा मैकाईल।
जबराईल जोस धनीय का, रुद्र तामस अजराईल।। ४५ ।।

हिन्दू विष्णु भगवान कहते हैं, मुसलमान अजाजील फरिश्ता कहते हैं। हिन्दू जिसे ब्रह्म कहते हैं, मुसलमान उसे मैकाईल कहते हैं। हिन्दू लोग धनी का जोश कहते हैं, मुसलमान जबराईल कहते हैं। हिन्दू लोग शंकर भगवान कहते हैं, मुसलमान अजराइल कहते हैं।

Nijanand App

बुध ब्रह्मा मन नारद, मिल व्यासे बांधे करम।
ए सरीयत है वेद की, जासों परे सब भरम।।४६।।

हिन्दू लोग मानते हैं कि बुद्धि का देवता ब्रह्मा और मन का रूप नारद है। व्यासजी ने कर्मकाण्ड के बन्धनों में बांध दिया है। जिसे लोग समझ नहीं सके हैं। यह सारा संशय वेद के कर्मकाण्ड से है।

वेदें नारद कह्यो मन विष्णु को, जाको सराप्यो प्रजापत।
राह ब्रह्म की भान के, सबों विष्णु बतावत।।४७।।

वेदों ने विष्णु के मन को नारद कहा है। जिन्हें प्रजापति ब्रह्माजी ने अस्थिरता का (यकीन पर न खड़े रहना) श्राप दिया है, इसलिए यह नारद भगवान सबको पारब्रह्म के रास्ते से हटाकर विष्णु की उपासना के रास्ते बताते हैं।

दम अबलीस अजाजील को, जाए कुराने कही लानत।
सो बैठ दुनी के दिल पर, चलावे सरीयत।।४८।।

अबलीस (नारद) अजाजील का मन है। कुरान में लिखा है कि इसे लानत लगी है, इसलिए यह मन नारद दुनियां वालों के दिलों पर बैठकर पारब्रह्म की राह से भटका कर कर्मकाण्ड में फंसाता है।

अजाजील दम सब दिलों, बैठा अबलीस ले लानत।
बीच तौहीद राह छुड़ाए के, दाएं बाएं बतावत।।४९।।

शैतान अबलीस को जो अजाजील फरिस्ता के मन का स्वरूप है, लानत लगी है। वह अखण्ड पारब्रह्म के रास्ते से भटकाकर सबकी वृत्ति को इधर-उधर घुमा देता है।

सोई अबलीस सबन के, दिल पर हुआ पातसाह।
एही दुस्मन दुनी का, जिन मारी सबों की राह।।५०।।

वही शैतान अबलीस सबके दिलों पर बादशाह बनकर बैठा है और दुनियां का दुश्मन होने के कारण श्री प्राणनाथजी के स्वरूप की पहचान नहीं करने देता और सबका रास्ता रोकता है।

मलकूत कह्या बैकुंठ को, मोहतत्व अंधेरी पाल।
अछर को नूरजलाल, अछरातीत नूरजमाल।।५१।।

हिन्दू जिसे बैकुण्ठ कहते हैं, मुसलमान उसे मलकूत कहते हैं। हिन्दू लोग जिसे मोहतत्व कहते हैं मुसलमान उसे अंधेरी पाल (जुलमत) कहते हैं। अक्षर को नूरजलाल और अक्षरातीत को नूरजमाल कहते हैं।

ब्रह्मसृष्ट कहे मोमिन को, कुमारका फरिस्ते नाम।
ठौर अछर सदरतुलमुंतहा, अरसुल्अजीम सो धाम।।५२।।

ब्रह्मसृष्टि को मोमिन कहते हैं। ईश्वरीसृष्टि को फरिश्ते कहते हैं। अक्षरधाम को सदरतुलमुंतहा कहते हैं और परमधाम को अर्श अजीम कहते हैं।

श्री ठकुरानी जी रूहअल्ला, महंमद श्री कृष्ण जी स्याम।
सखियां रूहें दरगाह की, सुरत अछर फरिस्ते नाम।।५३।।

श्री ठकुरानी जी को रूह अल्लाह कहते हैं। जिसकी महिमा शब्दों में न आए ऐसे मुहम्मद श्री कृष्णजी को श्याम कहा है। परमधाम की रहने वाली सखियों को कुरान में रूहें कहा है। अक्षर की सुरता को कुरान में फरिश्ते कहा है।

Nijanand App

बुध जी को असराफील, विजया अभिनन्द इमाम।
उरझे सब बोली मिने, वास्ते जुदे नाम।। ५४ ।।

जागृत बुद्धि को कुरान में असराफील कहा है। विजियाभिनन्द को कुरान में इमाम मेंहदी कहा है और इस तरह से सब अलग-अलग बोली और अलग-अलग नामों में उलझे हैं।

बाकी तो वेद कतेब, दोऊ देत हैं साख।
अन्दर दोऊ के गफलत, लड़त वास्ते भाख।। ५५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि वेद और कतेब, अर्थात् सभी पुराण और कुरान साक्षी के ग्रन्थ हैं, परन्तु हिन्दू मुसलमान पढ़ने वालों में ही अन्धकार का ज्ञान भरा है और इसलिए यह दोनों भाषा की लड़ाई लड़ रहे हैं।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ६४२ ॥

कंसे काला-गृह में, किए वसुदेव देवकी बन्ध।
भानेज मारे आपने, ऐसा राज मद अन्ध।। १ ।।

कंस ने अपने बहन-बहनोई देवकी और वसुदेव को जेल में बन्द कर दिया और राज मद में अन्धे होकर अपने भांजों को मारा।

नूह काफर की बंध में, रहे साल चालीस।
बेटे मारे कई दुख दिए, तो भी काफर न छोड़ी रीस।। २ ।।

नूह पैगम्बर काफिरों के बन्ध में चालीस वर्ष तक रहे और उनके बेटों को मारकर बहुत कष्ट दिया फिर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ।

कहे वेद बैकुंठ से, आए चतुरभुज दिया दीदार।
वसुदेव तिन सिखापन, स्याम पोहोंचाया नंद द्वार।। ३ ।।

वेद कहते हैं बैकुण्ठ से चतुर्भुज विष्णु भगवान ने जेल में आकर दर्शन दिया और वसुदेवजी को सिखापन (शिक्षा) दिया कि जो अब बच्चा पैदा होगा, उसे नन्दजी के घर गोकुल में पहुंचा देना, इसलिए बालक श्री कृष्ण को नन्द जी के घर पहुंचा दिया।

मलकूत से फरिस्ता, नूह समझाया आए।
नसीहत कर पीछा फिर्या, नूहें स्याम दिया पोहोंचाए।। ४ ।।

मलकूत से फरिश्ते ने आकर नूह पैगम्बर को सब हकीकत किस्ती आदि के बारे में बताई और नूह पैगम्बर ने नसीहत के मुताबिक श्याम को पहुंचा दिया।

अहीरों की कोम में, जित महत्तर नन्द कल्यान।
सुख लिया बृज वधुएं, औरों न हुई पेहेचान।। ५ ।।

अहीर जाति की कौम में नन्दजी और कल्याणजी गांव के मुखिया थे। वहां पर बृज में गोपियों ने श्री कृष्णजी से प्रेम और आनन्द प्राप्त किया। दूसरे लोग उनको नहीं पहचान सके।

महत्तरों की कोम में, जित हूद कील सिरदार।
जोत रसूल टापू मिने, दिया जबराईलें आहार।। ६ ।।

महत्तर जाति के घर में हूद और कील मुखिया थे। जबराईल फरिश्ते ने आत्मिक आहार उनको पहुंचाई जो टापू में सहायता के लिए आए।

Nijanand App